

ज. भारत माझी देशों को अनावृत्त वीक्षण 'मोट' के नाम के लिए
लोचिनाम के राजा पितापुत्र II ने 1876 ई. में
भाषीयन जिहा मोट अंतराष्ट्रीय संस्था की स्थापना
में यूरोपीय देशों के साथ भाषी विवादों का शांतिपूर्ण
रास्ते ।

- फ्रांसीसी ने जाँको की समस्या तथा अन्य विवादों के निपटारे के लिए माँग की। यह नवंबर १८०५ ई. से जून १८१४ ई. तक चला। इसमें धोपी में सभी यूरोपीय राज्यों को अपना भाँटा नौ पारसियों की वस्तुओं के पुर्नान्वेषण सम्मेलन संचालन के लिए एक भाँटा की स्थापना हुई।
- बार्सेलोन सम्मेलन में भूमी का क्षेत्राधिकार व औद्योगिक विकास को ध्यान में रखा गया था, लेकिन यूरोपीय राज्यों ने भूमिका को अपना नहीं माना क्योंकि वे कई भूभागों पर दावा करते थे जो एकत्रित नहीं हुए।

विभिन्न यूरोपीय देशों के भूदृष्टि में वर्णन

श्रौत \Rightarrow अल्पीत्या, मोरम्, धूमिल, भाइवी नाल भादि
इत्येवं \Rightarrow मिल, मरु, की, ...

इलेक्ट्रॉन → मिल, धूल, दही, भाइवी, मोल, भादि

અમંતી = ઔસલન, હોગલેડ, પુણાપ્ડ, ગોલક મોલ

कुल्लुवाल = कुल्लुवाल, पूवी मोल्नायक